सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - श्री वल्लभ

VIBRANT PUSHTI

" जय श्री कृष्ण "

" यमुना " 🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति में और हमारे इतिहास में " गंगा - यमुना "

मूलभूत आचार्योंने बार बार स्पर्श करवाया, वह खुद उनके ही सानिध्यमें अपना आध्यात्मिक जगाते थे।

इसका अर्थ यह हुआ कि यह दोनों सरिता या धाराको अवतरण में प्रज्वलित किया हैं।🙏

इनकी बूंद - इनकी लहर - इनकी धारा - इनका एकात्म होना कोई असाधारणता हैं। जो हमें अवश्य जाननी और पहचाननी चाहिए अगर हमें आध्यात्म पाना है - होना हैं - दासत्व पाना हैं - मुक्त होना हैं या परब्रह्म में लीन होना हैं।

यह आचार्यो एक एक बूंद - लहर और धारा से जुडे थे। तब ही वह अपने आपको कक्षित - रक्षित और शिक्षित पाया 🙏

हम आडंबर, अंधश्रद्धा और अज्ञानता से यह सरिताओं को ऐसे ही छोड़ दें तो हमारा स्व आध्यात्म नष्ट हो जाता हैं।

हम चाहे कितने ही उनका स्मरण पाठ, पूजा और गुणगान कर लें।

हमारा संस्कार, व्यवहार और आचार इनसे जुड़े हैं। हम इन्हें नहीं समझेंगे तो हम कुछ नहीं हो सकते - एक साधारण सा जीव बस जी गया चाहें कितनी भी भौतिकता का मालिक हो।

सोच लो! 🌷🙏🌷

Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कौन नहीं अपना!
एक ही धरती
एक ही आसमां
एक ही सूर्य
एक ही चंद्र
एक ही सागर
एक ही हवा
एक ही परमात्मा
स्व मन से हमने कर दिया विभाजन
मेरा मेरा मेरा मेरा
मेरा मेरा में
धरती गंवाई
आसमां गंवाया
सागर गंवाया
हवा गंवाई
परमात्मा गंवाया
हम मन मनुष्य से मुमुक्षु देवता
हम तन तपस्या से तनुनवत्व आत्मा
हम धन धान्य से धार्मिक दाता
तो भी भिन्न विभिन्न विचार वर्तता
इतना तोड़ा - इतना छोडा इतना लुटा
न कोई किसीका न कोई अपना
अवश्य सुनो 🌷🙏🌷
हर कोई सत्य
हर कोई श्रेष्ठ
हर कोई उच्च
हर कोई धनवान
तो भी हर कोई परेशान!
क्यूं!
छोड़ो यह तोड़ना 🙏
छोड़ो यह लुटना 🙏
छोड़ो यह मारना 🙏
सबकुछ हमारा ही है तो साथ साथ आनंद आनंद आनंद महकाना 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज जो उम्र पर हम है, गौर करे हम कहां हैं?

हमारी पास धन दौलत, अमीरी खेत खलियान जो मन चाहा है वह है 👍

कुटुंब में साथ साथ आन बान और शान से जीते हैं 🙏

धर्म धारणा पारायण में डूबे हैं 🙏

मान सम्मान पाते हैं - मिलते हैं और बस कहते रहते हैं

श्री प्रभु की कृपा - मातापिता का आशीर्वाद और हर एक का स्नेह और साथ 👍

वाह! 🌷🙏🌷

उम्र उम्र का काम करता है

नसीब नसीब का काम करता है

भाग्य भाग्य का काम करता है

दयालु परमात्मा दया की कृपा बरसाता है

अति उत्तम 🌷🙏🌷

कौन कहता रहता हैं? हर कोई 🙏

हमारा मन, तन, धन और जीवन श्रेष्ठ श्रेष्ठ और श्रेष्ठ

आपको हमारा प्रणाम 🙏

यही कक्षा - यही रक्षा और यही शिक्षा सबको मिले तो! 🌷🙏🌷

सोचना! अवश्य सोचना! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

डगर डगर
कदम कदम
साथ साथ
पास पास
अपने पराये
दूर नजदीक के
बार बार स्मरण कराये
बार बार सत्संग कराये
बार बार संस्कार समझाये
बार बार जीना सिखाये
बार बार कुछ कुछ समझाये
बार बार कुछ पाये
सच! अजब गजब का है संसार
कहते कहते रहते हैं
सुनते सुनते रहते हैं
बोलते डोलते रहते हैं
जैसा भगवान रख्खे ऐसे रहते हैं।
धर्म कभी भी किसीको कष्ट नहीं देता
धर्म कभी किसीको हैरान नहीं करता
धर्म कभी किसीको दु:खी नहीं करता
धर्म कभी किसीको तकलीफ़ नहीं देता
हम मतवाले
हम अंधश्रद्धा वाले
खुद से खुद का दु:ख रचे
खुद से खुद का कष्ट बांधे
खुद से खुद की तकलीफ़ भरे
और दोष दें भगवान को
और दोष दें जन्म देने वाले को
गजब हैं यह संसार के मानव
गजब हैं यह जगत के मानव
गजब हैं यह दुनिया के मानव
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
जो संभलें तो हम ऐसे
जो संभलें तो तुम ऐसे
" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक वैज्ञानिक था, उन्होंने अपने आपको टटोलना शुरू किया - जैसे उठते ही वह अपने नैनों से जो भी देखता था और उनके जीवन में उसकी क्या असर होती थी और यही असर से वह कैसे जी रहा होता हैं वह लिखता रहता था।

अनेकों दिन बीत गए, वह ऐसे ही बैठा था और उनके हाथ वह डायरी लगी। वह तारीख आधारित पढ़ने लगा तो वह इतना अचंभित हो गया की क्या मैं ऐसा हूं!

जो स्नातकता - जो संस्कार - जो शिक्षा और जो उनकी नित्य क्रियाओं थी उनमें कहीं जीवन व्ययता उन्होंने तय किए सिद्धांत और नीति विरुद्ध थे। वह सोचने लगा - ऐसा कैसे?

मैं तो सत्याग्रही तो इतना आडंबर कैसा!

मैं तो सैद्धांतिक तो इतना बेदरकार कैसा!

मैं इतना स्वच्छंदी तो इतना अस्वच्छ कितना!

मैं इतना दयालु तो इतना अहंकारी कैसा!

मैं इतना निर्मोही तो इतना लालची कितना!

मैं इतना परोपकारी तो इतना स्वार्थी कैसा!

मैं इतना धर्म परायण तो इतना अधर्मी कैसा!

ओहहह!

मेरे मित्रों! यह सत्य है 🙏

नहीं तो आज हमारी दुनिया - हमारा जगत - हमारा संसार और हमारा जीवन अज्ञानी, अहंकारी, आडंबरी, अंधश्रद्धा भरा और अधंकार भरा नहीं होता 🙏

हम धन दौलत - अमीर गरीब - अधर्म - और कहीं तफावतों में नहीं फिसलते 🙏

हम काया माया में नहीं बंधते 🙏

माफ़ करना 🌷🙏🌷

यह तो एक उर्जा जागी वह प्रज्वलित करने की कोशिश करता हूं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

" कान्हा " न तु मुझसे रुठे न मैं तुझसे रुठु

" कान्हा " न तु मुझसे बिगडे न मैं तुमसे बिगड़ु

" कान्हा " न तु मुझसे खफा न मैं तुझसे खफा

" कान्हा " न तु मुझसे तन्हा न मैं तुमसे तन्हा

" कान्हा " न तुमसे छुपे न मैं तुमसे छुपा

" कान्हा " न तुमसे अलग न मैं तुमसे अलग

" कान्हा " मुझे पता है तु मुझसे कितना प्यार करे!

पर मुझे इतना अवश्य पता हैं मैं तुमसे कितना प्यार करुं!

" कान्हा " मुझे पता है तु मुझसे कितना तरसता है!

पर मुझे पता है मैं तुम्हारे लिए कितना तरसता हूं!

" कान्हा " मुझे पता है तु मेरा कितना ख्याल करें!

पर मुझे पता है मैं तुम्हारे लिए कितने ख्यालों में खोया हूं!

मेरा दिल ही एक ऐसी स्थली है जहां तु चैन से ठहर सके 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्याम ने पुकारा श्याम ने बंसी बजाया

सूर सूर ऐसा छेड़ा सुना वह तड़पाया

कोई कहें मुझे पुकारा कोई कहें श्यामा

कोई कहें हम गोपियां कोई कहें प्रिया

सूरदास कहें श्याम उन्हें पुकारा जिसमें बसे राधा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जहां नजर उठती हैं वहां ऐसा विज्ञापन दिखता हैं - आज यहां श्री मद भागवत कथा है - आज यहां अष्टसखा चरित्र प्रवचन हैं - आज यहां श्री नाथजी प्राकट्य चरित्र लीला हैं - आज यहां श्री चौरासी कोस व्रज यात्रा का रजिस्ट्रेशन है 🌷🙏🌷

हर कोई कोई न कोई सत्संग, प्रवचन, कथा या यात्रा में डूबा रहता हैं।

तब मन में एक ख्याल उठा - क्या यही जीवन का लक्ष्य हैं जो सदा यही में डूबा रहना या यही से कुछ पा कर कुछ स्व में जगाना और जीवन को योग्य और मधुर करना?

हर रोज दर्शन करने पहुंचते बस यही ही देखना और ऐसी वैसी बातें कह कर सुन कर अपने व्यवसाय में खो जाना।

ऐसा दिन दिन - वर्ष वर्ष - दशक दशक और आखिर जीवन पर्यन्त 🙏

यही यापन से देखा समाज बस ऐसे ही जी रहा हैं और मैं यही समाज का सभ्य मैं भी ऐसे ही जीवन पर्यन्त निभा रहा हूं।

पर एक दिन एक ऐसी घटना घटी और मैं झग जगा गया, मुझे यही दर्शन करते मुझे किसीने टटोला - ओय! क्या करता रहता हैं? तु हर रोज मुझे मिलने आता हैं तो तुझे मेरा संकेत या कोई द्रष्टि लीला तुझे कुछ कहती नहीं हैं?

मैं अचंभित रह गया! और अपने मन और द्रष्टि को बटोर कर झांकने लगा - तो समझ आया की मुझे ऐसे ही मानव समुदाय और समाज के लिए " सैद्धांतिक और व्यावहारिक समझ से सेवा में डूबना हैं " न कोई व्यवहार - न कोई अर्थोपार्जन अपेक्षा - न कोई संगत 🙏

बस! जो कौटुंबिक हैं यही से सेवा अर्चना अर्पण करते जाना।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

यही करते करते जो जो निकटता - स्पर्शता और जागृतता जागी इनमें " श्री वल्लभाचार्य चरित्र " का सत्संग पाया 🙏 मन दौड़ने लगा, तन थिरकने लगा और आत्मा विचलित होने लगा। देह साधन और कौटुंबिक साथ और श्री पुष्टि मार्ग समाज ने मुझे कदम भरने के लिए ऐसी भूमिका तैयार करने लगी की बस चारों ओर -

श्री अष्टसखा

श्री वल्लभ 🙏

श्री यमुना 🙏

श्री गिरिराज 🙏

और

श्री श्रीनाथजी 🙏

क्रमशः 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा! मैं एक अधूरा

हे कान्हा! मैं एक अज्ञानी

हे कान्हा! मैं एक अहंकारी

हे कान्हा! मैं एक अभिमानी

हे कान्हा! मैं एक विरही

हे कान्हा! मैं एक अतृप्ति

हे कान्हा! मैं एक त्रासदी

हे कान्हा! मैं एक घृणास्पद

हे कान्हा! मैं एक अनपढ़

हे कान्हा! मैं एक..........

मुझसे तु दूर या तुमसे मैं दूर

नहीं नहीं नहीं नहीं

दूर दूरी की रीत नहीं

अधूरी अझूरी सी प्रीत नहीं

तु मेरा मैं तेरी यही माने जीया

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वल्लभ! वल्लभ! वल्लभ! वल्लभ! "

बार बार सुना बार बार सुने

बार बार गाया बार बार गाये

बार बार कहा बार बार कहे

बार बार स्मरा बार बार स्मरे

क्यूं? नाम स्मरण सूर और तरंग में जो स्पंदन जागते हैं - स्फूरते है - उठते हैं 🙏 अदभुत! 🌷

हमारे नैन - हमारा मन - हमारी श्वासे - हमारी धड़कन कितनी शांत और एक लय में घुटती हैं।

ऐसा क्यूं?

क्यूंकि हमने श्री वल्लभ के समाज में जन्म धरा है। हमने श्री वल्लभ चरित्र को छुने का विश्वास भरा पुरुषार्थ किया हैं। हम श्री वल्लभ की रचनाओं को छु कर समझने की कोशिश कर रहे हैं। हम श्री वल्लभ के सानिध्य पाने के लिए उत्सुक हैं। हमारा मन उनकी ओर आकर्षित होता जा रहा हैं। हम श्री वल्लभ के बताए मार्ग और सिद्धांत पर जीवन व्यापन की कोशिश कर रहे हैं।

ओहहह!

यह श्री वल्लभ का चरित्र - दर्शन और सत्संग हममें आमूल परिवर्तन कर रहा हैं जिससे हममें अदभुत स्पंदन जागते हैं। 🌷 🙏 🌷

" श्री वल्लभ प्राकट्य " संप्रदाय जो चारित्र्य करें पर उनका प्राकट्य अनेकों संकेत और वैज्ञानिक सिद्धांत सिद्ध करते हैं। 🙏

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

एक साहित्यकार था। वह साहित्य में ऐसा निपुण था की हर अक्षर और शब्द का व्याकरण अर्थ के साथ अर्थपूर्ण व्याख्या करता था। उनके हाथ षोडश ग्रंथ लगा और जैसे उन्होंने यह पढ़ा " मुरारी पद पंकज सफूरदमन्द रेणुत्कटाम "

अरे! यह कैसी लिखावट? ऐसा कैसे कह सकते हैं?

मुरारी पद पंकज - मुरारी के पद पंकज जैसे है।

मुरारी पद पंकज स्फूरदमन्द - मुरारी के पंकज जैसे पद से दमन्द स्फूरे।

मुरारी पद पंकज स्फूरदमन्द रेणुत्कटाम - मुरारी के पंकज जैसे पद से उत्कट रेणु दमन्द से स्फूरे।

वह सोचता ही रहा - सोचता ही रहा और अपने मन मनस्का और तन तनस्का से वह व्याकरण अर्थ करता करता अपने आपको मुरारीमय कर दिया। जो भी कुछ करता तो साथ साथ यह भी उच्चारता - " मुरारी पद पंकज स्फूरदमन्द रेणुत्कटाम "

ऐसी मशगुलता में वह डूब गया तब उनके नैनों में से बूंद बूंद बरसने लगा, बरसते बूंदों से वह अपने आपको भिगोने लगा, भिगते भिगते वह इतना भिग गया की उनका हर अंग भिग गया। पूरा बदन शीतल हो गया - कण कण से मधुर महक उठने लगी, मन शांत और स्थिर हो गया।

तब उनके चैतन्य नैनों को संकेत मिला - हे उत्कट रेणुओं से स्फूरे विरह नैनों अपनी पुष्टि दिव्य द्रष्टि से देखो 🙏

साहित्यकार ने अपने मूंदे नैनों को धीरे धीरे खोला तो सामने पाया " मुरारी पद पंकज " 🌷🙏🌷

वह अचंभित रह गया और इतनी उत्कट आनंद की अनुभूति पाने लगा की वह

बार बार स्मरण करने लगा उस रचनाकार का जिसने यह पंक्ति की रचना की थी - उनका हृदय आत्मा से बार बार नमन करके उनका धन्यवाद करता था। उनकी संपूर्ण एकात्मकता प्रार्थना करता था - जिसने यह रचना रची है उसका मुझे साक्षात्कार हो। 🙏

तब ही एक बैठकजी पर बिराजे श्री वल्लभाचार्य का दर्शन उन्हें हुए 🌷🙏🌷

वह पुकार उठा - हे वल्लभ! हे वल्लभ! आपकी कृपा 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह एक वैज्ञानिक सिद्धांत है

"जो मन जो माने वही वह मानव स्वभाव का है। "

हम विज्ञान के सिद्धांतों को मानते हैं तो हम अवश्य वही सिद्धांतों आधारित ही सबकुछ करेंगे। चाहे उनके साथ साथ - इस पास - आचार व्यवहार कैसे भी विषयों का हो। वह वही सिद्धांतों से ही अपना आचार व्यवहार करेगा।

पर

जो उन्हें डरा कर - जबरदस्ती कर - गैर मार्ग दोर कर हम मजबूर करेंगे तो वह कमजोर हो कर तथ्यों हीन जीवन जीयेगा। 🙏

हमारा भारत - हमारा हिन्दुस्तान ऐसा है 🌷🙏🌷

अकेले बैठकर सोचो या साथ साथ सोचो

अब हमें इनमें परिवर्तन करना है

जो प्रथम स्व स्वीकार और अपनाने से ही आयेगा 🌷🙏🌷

तो शुरू करे 👍

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक साधु था जो दिन रात सदा श्री प्रभु भजन और सत्संग में लीन रहता था और सदा श्री कल्याणरायजी हवेली पर मंगला से गौचारण या ग्वाल के दर्शन तक फल बेच कर अपना जीवन निर्वाह करता रहता था।
कभी किसीको कोई भी प्रकार की तकलीफ़ हो तो सेवा करके अपने श्री प्रभु स्मरण में मग्न रहता था। ऐसे ऐसे कहीं बरसों बीत गए और वह जीवन के आखरी पड़ाव पर जा पहुंचा।
वह अपना नित्य पुरुषार्थ निभाता और आनंदमय जीवन बिताता था। एक दिन एक दर्शनार्थी ने हंसते हंसते पूछ लिया - हे साधुदास! आप इतने बुजुर्ग हो गये हो और कहीं वर्षों से अपना जीवन यही स्थली पर बिताए तो क्या आपको कभी श्री प्रभु दर्शन हुए?
वह साधु प्रश्नोक्त व्यक्ति की ओर एक नजर से देखते और दो हाथों से नमन कर विनम्रतापूर्वक कहा - हां! मैंने श्री प्रभु के अवश्य दर्शन किए हैं 🙏
वह प्रश्नोक्त व्यक्ति अचंभित हो कर दूसरा प्रश्न पूछा - वह कैसा है?
साधुजी ने फिर से प्रणाम करके कहा - बिल्कुल हर्षोल्लासी 🙏
मधुर वदनं - मधुर हृदयं - मधुर रुपं - मधुर करुणं - मधुराधिपते रखिलं मधुरं 🙏
व्यक्ति अत्यंत भावविभोर हो गया और एक और प्रश्न पूछ डाला - कहां दर्शन में मिले थे?
साधुजी के नैनों से पुष्टि करुणा बहने लगी - मुखड़ा तेजोमय हो गया और अति संभाल कर कहा - मुझे दर्शन दिए यह हवेली के द्वार पर 🙏
व्यक्ति सहमा उठा और अपने आपको अति घिनौना समझ कर साधु को प्रणाम कर चल दिया। वह मन से - तन से और समय से बैचैन हुए अपने आपको अत्यंत निम्न समझ कर दु:ख भरे चेहरा से खिसक गया।
दूसरे दिन फिर वह मंगला दर्शन में भेंट हुई - वही चेहरा - वही भाव और वही ही गति से चला गया। ऐसे दिन पर दिन बीत गए।
एक सुबह फिर वह व्यक्ति साधुजी के सामने खड़ा हो गया और प्रणाम करके पूछा - हे साधुजी! मैं करीब पचास वर्ष से यह हवेली मंगला दर्शन के लिए अचूक रहता हूं और सदा विशुद्ध विश्वसनीय जीवन निर्वाह में डूबा संसार में जीता हूं साथ साथ एक आश लगाए फिरता रहता हूं - मुझे दर्शन होंगे - मुझे स्वीकार करेंगे 🙏
पर न कोई संकेत - न कोई स्पंदन - न कोई समय सूचकता। बस एक ही समय धारा बहती है - बहती है और बहती है 🌷🙏🌷
आप मुझे कोई मार्गदर्शन दो तो मैं भी कुछ झांकी पाऊं 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
जो साधुजी ने कल वह दर्शनार्थी व्यक्ति की प्रार्थना सुनकर और उनकी जिज्ञासा भरी तीव्रता देखकर उन्होंने एक ऐसी भूमिका रची - हर रोज वह दर्शनार्थी को सामने " जय श्री कृष्ण " कह कर उन्हें वंदन करने लगे। एक दिन के बाद दूसरे दिन और दिन ब दिन वह " जय श्री कृष्ण " और वंदन से इतना व्यथित और लज्जित कर दिया की वह व्यक्ति के अंदर वेदना और संताप जागने लगा।
वेदना उन्हें एक भक्त साधु मुझे बार बार " जय श्री कृष्ण " और वंदन करे - मुझमें इतनी तो क्या महत्ता है? वह लज्जित और सहमा सहमा रहता था।
संताप इसलिए उठता था की मैं कैसा देहधारी आत्मा हूं जो मुझे श्री प्रभु का संकेत या झांकी भी नहीं होती हैं!

दिन पर दिन बीतने लगे एक दिन दर्शनार्थी जैसे श्री कल्याणरायजी हवेली पहुंचा और प्रथम वह साधु जी को " जय श्री कृष्ण " कह कर वंदन किया 🙏

साधु जी पुलकित हो उठे और नाचते नाचते कहने लगे

भाई! तुम श्री वल्लभ के निकट पहुंच रहे हो 🙏

आज मेरा प्रयत्न सफल रहा की तुम जब भी हवेली में दर्शन करने आते हर व्यक्ति में श्री प्रभु का दर्शन नहीं देख सकते हो तो तुम्हें बिराजमान श्री प्रभु के संकेत और स्पंदन कैसे पा सकोगे! आज तुमने जो मुझे " जय श्री कृष्ण " के साथ वंदन किये 🙏

यही प्राथमिक संकेत है श्री प्रभु दर्शन का 🙏

दर्शनार्थी व्यक्ति आनंदमय हो कर वह भक्त के चरण पकड़ लिए, वह अभिमान रहीत अहंकार विहिन हो गया। आज उन्होंने पुष्टि मार्ग का " दासत्व " का सिद्धांत पाया 🙏

जैसे गर्भगृह में पहुंचा और श्री प्रभु विग्रह का दर्शन किया तो उन्हें कुछ अजब सी अनुभूति हूई। उनके नैनों स्थिर और अपलक श्री प्रभु को निहार रहे थे। तन मन में स्पंदन उठ रहे थे।

दर्शन की पूर्णता तक वह वहां का वातावरण में डूबा रहा, जैसे टहल हूई वह बाहर आते ही श्री साधु भक्त को लिपट गया। आज उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था।

श्री साधु भक्त ने कहा - भाई! यही ही प्रारंभिक लीला है पुष्टि प्रणय की 🙏

धीरे धीरे यह रीति में डूबते रहो 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " " जय श्री कृष्ण "

मन और नयन पटल पर जब स्फूरते हैं तब हमारी आत्मा को ऐसे स्पंदन स्पर्श होते हैं जो उन्हें अधिक तेजोमय करता हैं।

यह अनुभूति श्री वल्लभ को प्रथम मिलन श्री श्रीनाथजी से गोवर्धन पर्वत पर हूई 🌷🙏🌷

वह जैसे जैसे श्री श्रीनाथजी के प्राकट्य स्थली पर पहुंचे, मन और नयन द्रष्टि का मिलन हुआ - श्री नाथजी पुकार उठे - वल्लभ!

श्री वल्लभ शरणागति से नमन करके अति हर्षोल्लास से पुकार उठे - " जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

और दोनों का प्रगाढ़ मिलन 🙏

आध्यात्म आत्मा का परमात्मा से एकात्म 🌷🙏🌷

पुष्टि मार्ग का प्राथमिक सिद्धांत - जो स्व आत्मा को, स्व मन को, स्व तन को और स्व जीवन को सदा श्री कृष्णमय में डूबोते रहे तो अवश्य प्रथम मिलन की लीला प्रकट हो 🌷🙏🌷

" जहां जहां मन दौड़े वहां मुझे मेरा कान्हा दिशे "

" जहां जहां मेरा नयन पहुंचे वहां वहां मेरा वल्लभ प्रक्टे "

तो स्व जन्म जीवन पुष्टि संस्कार सिंचे

तो स्व संसार पुष्टि संस्कृति से मधुर बने

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे वल्लभ! आपने अपने प्रथम मिलन से ही हमें जता दिया की ' अपने ह्रदय में श्री कृष्ण बिराजें

यही श्री कृष्ण हर हर में निहाले

तो " जय श्री कृष्ण " " जय श्री कृष्ण "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्यार देह भी है

प्यार महक भी है

प्यार वचन भी है

प्यार आत्मा भी है

प्यार जन्म जन्मांतर का बंधन भी है

प्यार नैनों का एकरार हैं

प्यार सांसों का गुल जाना हैं

प्यार देह से सदेह होना हैं

प्यार विश्वसनीय वचन है

प्यार आत्मा से परमात्मा पवित्र पहचान हैं

प्यार की द्रष्टि अपलक हैं

प्यार की उर्जा प्रजवल्लित हैं

प्यार का देह विशुद्ध हैं

प्यार का वचन अतूट हैं

प्यार का आत्मा पुरुषोत्तम हैं

प्यार का परमात्मा आनंद हैं

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा!

तुम यह नैनों से दूर हो कर दिखाओ तो जाने तुम कितने छलिये हो 🌷

हे कान्हा!

तुम यह मन से बिछड़ कर दिखाओ तो जाने तुम कितने मनचले हो 🌷

हे कान्हा!

तुम यह तन से तुट कर दिखाओ तो जाने तुम कितने तपस्वी हो 🌷

हे कान्हा!

तुम यह धन से लुट कर दिखाओ तो जाने तुम कितने ज्ञानी हो 🌷

हे कान्हा!

तुम यह जीवन से छुट कर दिखाओ तो जाने तुम कितने प्रेमी हो 🌷

कान्हा! तुम छलिये

कान्हा! तुम मनचले

कान्हा! तुम तपस्वी

कान्हा! तुम ज्ञानी

कान्हा! तुम प्रेमी

तो मैं भी तुम्हारा दास हूं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा!

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरी मांग में व्रज रज भर दो 🙏

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे मन में नाम स्मरण भर दो 🙏

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे तन में विरह आग भर दो 🙏

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे जीवन में पुष्टि पुरुषार्थ भर दो 🙏

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे नैनों में लीला चरित्र भर दो 🙏

कान्हा! सिर्फ तुम्हारी 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक स्त्री है जो नित्य नूतन श्री प्रभु स्मरण में रहे। उनकी हर प्रवृत्ति में वह रीति - कृति पूर्व और पूर्ण " श्री वल्लभ " ऐसा उच्चारण उनके मुख से अनायास निकल पड़े।
गृहकार्य में भोजन, जल, सब्जी, आदि तैयार होते ही " श्री वल्लभ " 🙏
अपने धंधा किय कार्य में - ओफिस वर्क हो या उत्पादीय काम हो - सलाह सूचन हो - आदि उनके मुख से निकल ही आये " श्री वल्लभ " 🙏
एक रात वह अपनी पथारी में दिनचर्या के मनन में पड़ी रही थी तो सोचते सोचते वह कहीं बार " श्री वल्लभ " श्री वल्लभ " ऐसा सहसा निकल रहा था। तब ही उनके मानस पटल पर यह क्रिया आई - अरे मैं यह " श्री वल्लभ श्री वल्लभ " कैसे उच्चारित करती रहती हूं! और इससे मुझे आंतर आनंद और शांति अनायास से अनुभव करती हूं 🙏
मुस्कुराती आनंदमय हो कर वह अपने आप में खो जाती हैं।
बार बार हर रोज ऐसे डूबते डूबते वह आसपास के वातावरण और कौटुंबिक जनों को भी वह खुश रखती हैं।
उनके साथी और संबंधी भी उनसे सुखी और संतुष्ट रहते थे और उनकी हर प्रवृत्ति में उत्साहित थे।
हर कोई वह स्त्री के बारे में ऐसा ही सोचता था - सदा आनंद भरी, सदा काम में उत्सुक, सदा मृदु वचन, सदा आचारी, प्रमाणिक और विश्वसनीय 🙏
न रोग - भोग और कष्ट 🙏
हर व्यवहार शुद्ध और पवित्र
हर वृत्ति निखालस और मददगार
धीरे धीरे हर कोई उन्हें " श्री वल्लभ " श्री वल्लभ " कहने लगे और करने लगे। 🙏 सन्मान और आदर हर कोई देते और निभाते थे।
समाज के जीवन चक्र आधारित एक दिन एक व्यक्ति उनके पास आयी और उन्होंने ने ऐसी उलझन स्त्री को बताई की वह स्त्री के मुख से बार बार निकल गया - " श्री वल्लभ " श्री वल्लभ "! वह सहमा गई, वह गभरा गई, वह डर गई 🙏
घड़ी घड़ी - " श्री वल्लभ श्री वल्लभ " ऐसा पुकारने लगी। वह श्री वल्लभ को बार बार विनंती करके कह रही थी - श्री वल्लभ अब तु ही संभालना 🙏
जागतिक विडंबना को तो श्री प्रभु खुद नहीं बचे थे तो यह एक स्त्री!
लोक चर्चा का व्यभिचार से कौन नहीं फंसता है! बस यही व्यभिचार में वह स्त्री को फंसा दी।
समय समय और स्व कुशलता से यह स्त्री ने अपने को श्री वल्लभ की प्रेरणा और विश्वास से ऐसा मुक्त किया 🌷🙏🌷 की हर कोई कहने लगे - " श्री वल्लभ श्री वल्लभ "
क्रमशः - कल कहूंगा कैसे निपटाया जागतिक विडंबना भरा व्यभिचार 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" पतंग "

प - प्रिये
तं - तु ही
ग - गति

प - प्रेम
तं - तेरी ही
ग - गली

प - पूर्ण
तं - तादात्म्य
ग - गूंज

प - पुष्टि
तं - तृष्णा
ग - गोपि

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
हां! है कुछ पतंग
है कुछ डोर
जो एक आसमां को छुने अपने आपको डोर के हवाले कर जैसे जीआएं ऐसे आखरी सांस तक जीती है अपना सर्वस्व सोंप कर
अपने आपको एक ऐसी समय की धारा में शामिल करती हैं, जो अपना बलिदान दे कर भी डोर वालें को समर्थन देती हैं।
सच! कितनी अटूली जिन्दगानी हैं।
कितना अनोखा विश्वास
कितनी निराली श्रद्धा

सच! पतंग तु महान हैं 🙏
" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक दर्शन - एक चित्रजी - एक गृह सेवा - एक डेला - एक मंदिर - एक हवेली हमारी आसपास अवश्य है, यह जो दर्शन, चित्रजी आदि हमारे अपने आपकी श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक हैं।

हम उन्हीं ओर देखते हैं तो सोचते हैं वह भी हमें देख रहे हैं।

हममें सदा सत्य और संस्कार की अनुभूति कराते हैं।

ऐसा क्यूं?

ऐसा इसलिए की मैं सत्य हूं, मैं संस्कारी हूं। मेरी सत्यता से मैं मेरी आसपास आनंदमय वातावरण रच सकता हूं - शुद्ध समय काल रच सकता हूं - पवित्र क्रिया संस्थापित कर सकता हूं।

यह अनुभूति में सूरज शामिल होता हैं।

यह अनुभूति में मधुर हवा शामिल होती हैं।

यह अनुभूति में आसपास के पवित्र मन शामिल होते हैं।

यह अनुभूति में सूर संगीत शामिल हो कर गूंजते हैं।

यह अनुभूति में होंठ थडकते हैं

यह अनुभूति में धड़कन कुदती हैं

यह अनुभूति में नैनों नाचती हैं

यह अनुभूति में कंगना खनकती हैं

यह अनुभूति में पायल ठुमकती है

तो गा उठे जग सारा

" जय श्री कृष्ण " " जय श्री कृष्ण " " जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनी मधुर जीवन लीला 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" एक और एकादशी "

हमारे जीवन में कितनी ही एकादशी तिथि आती हैं - हर एकादशी कोई संकल्प या कोई विचार करता हूं यह एकादशी यह व्रत यह एकादशी यह त्योहार यह एकादशी यह निधि यह एकादशी यह पूजा यह माहात्म्य यह दार्शनिक 🙏

बस एक के बाद एक ऐसी एकादशी जाती हैं जो मैं न समझ पाता हूं और कुछ कर सकता हूं 🙏

बस इतना ही - एकादशी एकादशी एकादशी बोलता रहता हूं।

एकादशी को जो समझे तो

जीवन मधुर

जीवन आनंद

स्वभाव विजयी

मन एकाग्र

तन निरोगी

धन उपयोगी

आत्म वियोगी

अर्थोपार्जन पुरुषार्थी

स्पंदन ज्ञानी

नयन ध्यानी

ऐसी एकादशी की वाणी 🙏

और मैं और मेरा जीवन!

सुख दु:ख भरी कहानी

गंगा यमुना का पानी

मंदिर मंदिर की भटकानी

चारों ओर कलयुग जुबानी

यही मेरी एकादशी विरानी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ठंड का मौसम

मस्ती भरा दिन

सामने छाई झुमती मूरत

सर पर मयूर पंख

होंठ बजाये मधुर मुरली

नटखट कान्हा दिल ले गया

हां! नटखट कान्हा दिल ले गया

नैनों में काजल कानों में कुंडल

गले में वैजन्ती हाथों में कंगन

प्रेम मतवाला तिरछी नजरीयां

नटखट कान्हा दिल ले गया

हां! नटखट कान्हा दिल ले गया

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दोनों तरफ आग लगी

तेरा दिल जला मेरा दिल भी जला

जलते जलते तु मेरी मैं तेरा

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

हे प्यारी! तु दूर कहीं दूर

दूर दूर और दूर

नहीं नहीं तु मन में चूर चूर

चूर चूर और चूर

कभी नैनों में कभी होंठों पर

कभी सांसों में कभी राहों पर

एक ही तु राधा राधा राधा 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पुष्टि रीत

पुष्टि हित

पुष्टि गीत

पुष्टि मित

पुष्टि प्रीत

पुष्टि अद्‌वैत

जीवन की यह सरल निधि जो अपनाये उन्हें मनभावन तनभावन हृदयभावन आनंधधावन परमानंद पावन पुष्टता पाये 🙏

एक नन्ही सी किरण धीरे धीरे ज्योत हो

ज्योत से ज्योत दीपक हो

दीपक से दीपक दीपावली हो

दीपावली से दीपावली से सूरज हो

ऐसी है यह अद्‌वैत का दर्शन 🙏

हे कृष्ण! तु मधुर चरित्र

हे वल्लभ! तु पुरुषार्थ चरित्र

हे अष्टसखा! तु जीवन चरित्र

तुझसे पाया पुष्टि चरित्र 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर दूर तक तकता था

न कोई नजर आता था

हां! पर कोई नजर में था

हां! पर कोई मन में था

हां! पर कोई धड़कन में धड़कता था

प्रेम कहता था नहीं नजर ना

विरह कहता था नहीं प्यास बुझा ना

दिल कहता था यही ही एक मन था

जो कहीं दूर जा बसा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कान्हा "

तेरा मुखड़ा देखा तो मन दीवाना हो गया

यह स्मरण करते करते तु नैनों में बस गया

ऐसा कया हुआ जो दिल कुर्बान हो गया

तेरे ख्यालों में खोते खोते जीना मधुर हो गया

तेरा मुखड़ा चंदा जैसा

तेरी अदा भंवर जैसी

तु रोज रोज छेड़े प्रेम लीला ऐसी वैसी

तेरे ख़्याल में मनवा नाचें धार धार

सब कुछ लुटते लुटाते जीना भूल गया

लडी तों से नैना होता है तब से दरदवा

न मुंदे पलक नयनवा न सुझे कोई करमवा

तेरी सूरत प्रिये ऐसी न बुझे प्रेम ज्योत जरा सी

जब से मन में जागा कल्याण हो गया

मेरा मन तन धन तुझ पर वार गया

कान्हा ओ कान्हा!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी तस्वीर मन में बसे इसलिए यह नैनाएं हैं

तेरी महक तन में समाएं इसलिए यह नासिका हैं

तेरी लीलाएं जीवन में जंचे इसलिए यह कर्णे हैं

तेरा मधुर स्मरण याचे इसलिए यह अधरें हैं

तेरा कंथ की कंठी अतूट बंधे इसलिए गला हैं

तेरे प्रेम की अखंड ज्योत जले इसलिए आत्मा हैं

तेरे प्रीत का स्पर्श रहें इसलिए दिल हैं

तेरे प्रेरीत कार्य निपटते रहें इसलिए हस्तों हैं

तेरी धर्म संस्थापना पदयात्रा में सम्मिलित हो इसलिए पैर हैं

सच कान्हा! मेरा कोई ऐसा अंग नहीं जो तेरी प्रेम सेवा निर्माल्य में जुडा न हो 🙏

तु गजब का हैं तु अजब सा हैं तु बेहिसाब का हैं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

આનંદ પરમાનંદ અને સર્વાનંદ

આનંદ ને સમજી

આનંદ ને લુટાવવો

એટલે પરમાનંદ

પરમાનંદ ની અનુભૂતિ પામતા

સર્વે ને આનંદિત કરીએ

એટલે સર્વાનંદ

વલ્લભ એટલે આનંદ

શ્રી વલ્લભાચાર્યજી એ પુષ્ટિમાર્ગ સ્થાપ્યો એટલે પરમાનંદ

પરમાનંદ લુટાવી સર્વેમાં આનંદ જગાવે

એટલે સર્વાનંદ 🌷🙏🌷

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

एक कदम चले श्री दामोदर हरसानीजी और पा गये श्री पुष्टि प्रणेता का सर्वस्व 🌷🙏🌷

एक शिला रास्ते की संभाली श्री कृष्णदास मेघनजी ने और पा गये श्री पुष्टि प्रणेता का संरक्षण 🌷🙏🌷

एक अष्टाक्षर पुष्टि सिद्धांत को स्वीकारा श्री वैष्णवजी ने और पाया श्री पुष्टि प्रणेता का आनंद 🌷🙏🌷

हे श्री वल्लभ! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

🌷 🙏 🌷 " आशीर्वाद " 🌷 🙏 🌷

हे सूर्य! जब से सांस लेना हुआ तबसे बड़ी अनुकंपा 🙏

आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी मति सिद्ध करुंगा 🙏

हे धरती! जब से कदम धरा तबसे बड़ी रक्षा 🙏

आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी रज को विशुद्ध रखुंगा 🙏

हे सृष्टि! जबसे मन जागा है तबसे आपका समर्पण 🙏आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी प्रकृति की सौंदर्यता सुंदर रखुंगा 🙏

हे जल! जबसे तनने बंधारण बांधा तबसे आपका सिंचन🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी रुग्णता की पवित्रता रखुंगा🙏

हे वायु! जबसे जीवन पाया है तबसे आपका सानिध्य 🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी दया को सार्थक रखुंगा🙏

हे आत्मा! जबसे यह जीव में बसे हो तबसे जीवन तेजोमय करते हो🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी उर्जा की पुरुषार्थता की ब्रह्मता को सिद्ध करुंगा 🙏

हे मातापिता! जबसे आपने मुझे जन्म दिया तबसे धर्मता धरने संस्कार का हस्त थामा🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी वात्सल्यता का स्त्रोत बहाऊंगा 🙏

हे परब्रह्म! जबसे आपकी मूलभूतता का नूतन अंश प्रक्टाया है तबसे हर पुरुषार्थ कृति आपकी जगाई 🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी पुरुषोत्तमता को सर्वोच्च पर्दापण करुंगा 🙏

मैं आपका दास मुझे सदा आपके सानिध्य में ही रखना 🙏 सदा कृपा बरसाना 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🙏 🌷 🙏

लगी तो से ऐसी नैना

जहां जहां देखुं वहीं तेरा मुखड़ा

तु मथुरा बसे या द्वारिका

तेरा दिल तो मुझमें ही धड़के

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा! एक पल ही इतनी मधुर है

जिसमें तेरी याद है 🌷

हे कान्हा! एक क्षण ही इतनी आनंदमय है

जिसमें तेरी लीला है🌷

हे कान्हा! एक घड़ी ही इतनी तीव्र है

जिसमें तेरी दूरी है 🌷

हे कान्हा! एक अणु घड़ी ही इतनी स्पंदनीय है

जिसमें तेरी करुणा है 🌷

हे कान्हा! एक अणु क्षण ही इतनी अनोखी है

जिसमें तेरी प्रीत है🌷

कान्हा! हे कान्हा! प्रिय कान्हा!

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरा सुंदर चहेरा
उस पर नैन बसेरा
नजर से नजर टकरा
मन से मन संवारा
दिल तुझे पुकारा
यही प्रेम का इशारा
मेरे प्यार का सहारा
आजा मेरे प्यार दीदारा
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
तु मेरी सांवरी
मैं तेरा बावरा
तु कहे तु ही हो राधा
तो अवश्य मैं हूं तेरा कान्हा
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
गहराई से सुनना अपनी स्व आवाज से - अपने स्व स्वर से 🙏
" हरि सुंदर नंद मुकुंदा
नारायण हरि ओम् "
" हरि केशव हर गोविंदा
नारायण हरि ओम् "
अवश्य आप में से आनंद की एक सिसकारी निकलेगी और यह सिसकारी अपने अंग अंग में ऐसा स्पंदन जगायेगी 🙏
जो हमें बार बार गुनगुनाने का मन होगा 🙏
बार बार गुनगुनाने से पुकारने से नृत्य का आहवान होगा 🙏
यही नृत्य में श्री कृष्ण का आभास होगा 🙏
यही आभास अवश्य हममें ही श्री कृष्ण को प्रकट करता हैं 🙏
" हरि सुंदर नंद मुकुंदा
नारायण हरि ओम् "
हरि केशव हर गोविंदा
नारायण हरि ओम् "
🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷
सौंदर्य - सुंदरता हमारी यही गूंज में दर्शन होगी 🌷 🙏 🌷

हे कान्हा!

तेरे स्मरण में निहारु

तेरे दर्शन में निहारु

तेरे ख्यालों में निहारू

तेरे स्वप्न में निहारु

तेरे स्पंदन में निहारु

तेरे कीर्तन में निहारु

तेरे प्रतिबिंब में निहारु

तेरे किरण में निहारु

तेरे रंग में निहारु

तु कहे मैं क्या करूं?

बस तेरी याद

बस तेरी फरियाद

बस तेरी साद

बस तेरी नाद

बस तेरी विषाद

तु आ आजा तु आ आजा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

संग संग हां मेरे संग संग

है एक तरंग है एक उमंग

जो क्षण क्षण करें मुझे तंग

जो पल पल जगाये रंग रंग

सजाये सर पर मयूर पंख

रखें मधुर बंसी मुख अंग

छेड़े तान प्रेम गूंज बुलंद

मैं दौड़ी चली व्यंग व्यंग

धड़के जीया तेरे संग संग

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

हे कान्हा! तु कैसा है रे!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

यार! जैसे नैनों में सूरज नजर आता है

एक किरण जुड़ जुड़ कर एक इतनी विशाल ज्वाला हो गई जो सारे अनिष्टों को नष्ट कर देती है 🙏

यार! जैसे नैनों में सागर नजर आता है

एक एक बूंद से कितना अगाध जल समूह जो सारे तत्वों, वस्तुओं को अपने में समाए अनोखा परिवर्तन लाता है 🙏

यार! जैसे नैनों में जंगल नजर आता है

एक एक पत्ते अपने आपको एक एक के साथ इतना जुड़े रहते है कि सारी सृष्टि हरियाली अन्न और औषधियों से भरी सृष्टि को निरोगी और स्वस्थ रखता है 🙏

यार! जैसे नैनों में धरती नजर आती है

एक एक रज ऐसी बंधी है जो सदा जीवन को सुरक्षित और हर प्रकार के भार वहन कर सकते है 🙏

यार! जैसे नैनों में आसमां छा जाता है

ओहहह! हर कोई उनमें समाये अपने आप में खोये डूबे नजर आते है, हर कोई अपने आप के पुरुषार्थ में रहते है सबको बिना घबराए 🙏

ओहहह! कितनी श्रेष्ठता 🌷🙏🌷

और हम! सबकुछ हममें समाया हुआ है तो भी हम हर एक को तोडते है - छोड़ते है - बिगाड़ते है और नष्ट करते है 🌷🙏🌷

मानव - मनुष्य 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नाथद्वारा पहुंचा " श्री श्रीनाथजी " का दर्शन पाया 🌷🙏🌷

चंपारण्य पहुंचा " श्री वल्लभाचार्य " का दर्शन पाया 🌷🙏🌷

मथुरा पहुंचा " श्री श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी " का दर्शन पाया 🌷🙏🌷

गोवर्धन पहुंचा " श्री गिरिराज जी " का दर्शन पाया 🌷🙏🌷

मुखारविंद पहुंचा " श्री अष्टसखा " के दर्शन पाया 🌷🙏🌷

पुष्टि मार्ग धरा " श्री सुबोधिनीजी " के दर्शन पाया 🌷🙏🌷

गिरिराज परिक्रमा धरी " श्री वैष्णवजन " चरण रज पाया 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्रथम वैष्णव - दामोदर हरसानीजी 🙏

" सुन्यो पर समझा नहीं "

भ्रमित वाक्य का अंधश्रद्धा भरा अर्थ हमें सिद्धांत हीन करते हैं 🙏

हम जीवन जीते जीते कितनी शिक्षा पाते हैं - अनुभव करते हैं पर कभी ऐसा अर्थ करते हैं की - कोई कहे वह सुना नहीं और समझा नहीं, बस केवल अपने में मस्त रहना! सोच लो 🙏

अर्थ पथ निर्देशी और सिद्धांत सहीत ही उचित होता हैं 🙏

गैर समझ या अंधश्रद्धा और अंधविश्वास भरा नहीं होता हैं।

हम ज्ञान और विज्ञान और बिना तर्क रहेंगे तो ही हम सही मार्गदर्शन और सही आचरण करेंगे 🙏

यह कोई टिप्पणी या टीकात्मक नहीं हैं - यह शुद्ध व्याकरण अर्थ का पृथक्कृत समझना है 🙏

पुष्टि मार्ग अंधश्रद्धा और अंधविश्वास सिंचित मार्ग नहीं है 🙏 ठोर प्रमाणित और सार्थक सैद्धांतिक मार्ग हैं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" प्रथम वैष्णव - दामोदरदास हरसानीजी "

" दमला सो अमला "

श्री वल्लभाचार्यजी ने यह उपनाम और साथ साथ चरित्रता का प्रमाण 🙏

कितना बड़ा गौरव है मनुष्य जीवन का - जो साक्षात श्री आचार्य गुरुवर्य अपने स्व अनुभूति से मनुष्य जीव को प्रदान करे 🙏

यह ही कर्मो का फल है जो श्री कृष्ण कहते है - केवल कर्म करते रहो फल की इच्छा के बिना - जो कर्म योग्य हर कुछ योग्य ही योग्य 🙏

हां सो " दमला सो अमला " यह उपनाम के साथ जो कर्म में जीवन जी रहे है उसकी कृपा 🙏

उपनाम के साथ योग्य प्रमाणता, जो दमलाजी सदा सिद्धांत का अमल करते थे 🙏 सो अमला 🙏

जो सिद्धांत का अमल करे वह अमल ही होते है अर्थात स्वीकार्य और उसमें डूब जाना। जो डूब गया वह तैर गया सो अमला 🙏

अमला - जो सदा विशुद्ध हैं - पवित्र है - अपरसी है - जो सदा प्रसन्न है - परदु:ख भंजन है 🙏

जो श्री वल्लभ को पहचाने वही यह कृपा पावे 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" प्रथम वैष्णव - दामोदरदास हरसानीजी "

हमारी पुष्टि संस्कृति जो सनातन धर्म से उदभवीत इतनी परमानंदीय है जो हममें आनंद ही आनंद में डूबोयें 🌷🙏🌷

" दामोदरदास हरसानीजी " जो प्रथम वैष्णव - जिसके लिए श्री वल्लभाचार्य ऐसा उदगार व्यक्त करे - " दमला यह मार्ग तेरे लिए है " सोचे हम एक चरित्र के लिए कितना श्रेष्ठ प्रमाण 🌷🙏🌷

" यह मार्ग तेरे लिए उदभवीत है " ओहहह! अदभुत 🌷🙏🌷

यह चरित्र में ऐसा क्या है! जो इतनी बड़ी सार्थकता - यथार्थता सिद्ध की है!

हम भी यही सार्थकता और यथार्थता पा सकते है। जो पुष्टि सिद्धांत को सही समझ कर अपने में चरितार्थे 🌷🙏🌷

न अहंकार - न आडंबर - न अंधश्रद्धा - न अंधविश्वास

जो सत्य है वही स्वीकार्य 🙏

हमारे यही जगत जीवन में अपना सही व्यक्तित्व को जगाना है और सत्यता का सैद्धांतिक आचरण करना है 🌷🙏🌷

हम आये जगत में जो लेकर उन्हें अति उत्तम में प्रचंड प्रज्वलित कर अपने को तेजोमय होना है 🙏

श्री दामोदरदास हरसानीजी ने पुष्टि वैष्णवता से पुष्टि मार्ग की ससंस्थापना सिद्ध की और हमें उत्तम जीवन का मार्गदर्शन दिया 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज " लीला भूमि

" व्रज " प्रेम रज

" व्रज " प्रीत रंग

" व्रज " सखा संग

" व्रज " सखी अंग

" व्रज " गोप समर्पण

" व्रज " गोपि जन्म

" व्रज " भक्त सेवा

" व्रज " भक्ति तपस्या

" व्रज " प्रेम अवतार

" व्रज " श्री यमुना

" व्रज " श्री गोवर्धन

" व्रज " सूर्य धर्म

" व्रज " चंद्र रास

" व्रज " रसो वै से:

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

प्रेम 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक बार एक भक्त ने पुष्टि मार्गीय हवेली में दर्शन करते करते श्री प्रभु को दंडवत प्रणाम करते करते " जय श्री कृष्ण " की गूंज लगाई 🌷🙏🌷

हवेली में अपने आप चारों ओर से " जय श्री कृष्ण " के घंटारव उठने लगे 🌷

जो जो भी हवेली में थे वह सब सहसा हवेली के कमल चोक में आ कर आश्चर्यचकित होने लगे यह कैसा रव - गूंज और सूर 🙏

हवेली के मुख्याजी और हवेली के अधिकारी और कर्मचारी सब भीतरिया अचंभित हो कर आचार्य श्री के पास दौड़ पड़े 🙏

आचार्य भी यही सोच और विचारों में लीन हो गये 🙏

उन्होंने सब को साथ लेकर जहां से यह गूंज उठी थी वह स्थानक पर एक साधारण व्यक्ति अपनी दंडवत प्रणाम सेवा में डूबा हुआ था।

जैसे आचार्य जी ने वह व्यक्ति को स्पर्श किया तो हवेली के अंतपूर से मधुर लय की धून " श्री कृष्ण: शरणं मम " की सुनाई दी 🙏

आचार्य जी ने वह व्यक्ति को नमन करते कहा - हे परम भगवदीय वैष्णव! तुमने यह कैसी ज्योत जगाई है जो सारी हवेली गा रही है - श्री कृष्ण: शरणं मम।

उठो और कुछ अनुभूति का स्पर्श हमें भी कराओं 🙏

वह वैष्णव ने आचार्य जी के चरण स्पर्श करके कहा - हे आचार्यवर! आज मैं अपने आप से इतना व्यथित था की मैं अपने श्री प्रभु को " जय श्री कृष्ण " के अलौकिक नाम स्मरण से पुकार न सकु ऐसी संकोचता यह समाज में बिखरी है, उसे आज मैं श्री प्रभु को पुकार कर मुझमें क्या क्या दोष लगता है वह अनुभव कर सकु 🙏

जैसे मैंने दंडवत प्रणाम करते करते " जय श्री कृष्ण " की गूंज लगाई और सर्व दिशा से " श्री कृष्ण: शरणं मम " का सूर उठा 🙏

मैं श्री प्रभु में डूब गया 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरे दर पर आया हूं

तेरे मन में आया हूं

तेरी नज़र में आया हूं

तेरे अधर पर आया हूं

यूं ही आते आते तेरे स्मरण में आया हूं

यूं ही आते आते तेरे पास में आया हूं

पास पास से तेरे दिल में आया हूं

दिल दिल से प्रेम में छाया हूं

मिलन विरह की धूप छांव में तेरे दर पे आया हूं

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

हे राधा! तेरे सामने आया हूं

हे राधा! तेरे दरश में आया हूं

दरश दरश से तेरी राह में आया हूं

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

गोवर्धन जाता हूं

कुछ छूता है

विश्राम घाट जाता हूं

कुछ चिपकता है

वृंदावन जाता हूं

कुछ मचलता है

नंदगांव जाता हूं

कुछ खेलता है

बरसाना जाता हूं

कुछ बसता है

यही है व्रज की लीला 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझे मिला यह मनुष्य शरीर 🌷🙏🌷

अदभुत! मैं क्या कर नहीं सकता हूं?

मेरी नज़र जहां तक पहुंचे

मेरा मन जो तय करे

मेरा आत्म जो उजागर करे

मेरा ब्रह्म जो निर्णय करे

मैं कुछ भी कर सकता हूं

अकेला भी साथ साथ भी

यही सत्य है 🌷🙏🌷

यही परमेश्वर है 🌷🙏🌷

यही अवतार है 🌷🙏🌷

यही जन्म है 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मंगला श्री नाथजी

शृंगार श्री द्वारकाधीश

ग्वाल श्री नवनीत प्रिया

राजभोग श्री जगन्नाथ जी

उत्थापन श्री मथुरा नाथ जी

भोग श्री गोकुल चंद्रमा जी

संध्या आरती श्री मदनमोहन जी

शयन श्री गोवर्धन नाथजी

श्री वल्लभ कानी

श्री यमुना कानी

श्री गोवर्धन कानी

श्री विठ्ठल कानी

श्री गोकुल कानी

श्री हरिराय कानी

श्री अष्टसखा कानी

श्री ८४ वैष्णव कानी

श्री २५२ वैष्णव कानी

पुष्टि मूलत्व पुष्टि सुतत्व

पुष्टि शरणत्व पुष्टि कतृत्व

पुष्टि सेवत्व पुष्टि जीवत्व

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं सुबह उठता हूं

आज यह करना है यहां जाना है

ऐसा करना है ऐसा करवाना है

ऐसा होगा वैसा होगा

ऐसा ऐसा और ऐसा

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे मेरे मित्र! 🌷🙏🌷

नहीं ऐसा ऐसा और ऐसा

प्रथम श्री प्रभु स्मरण🙏

द्वीतिय श्री मातापिता वंदन🙏

तृतीय श्री पति पत्नी प्रीति🙏

चतुर्थ श्री भाई बहन विजयी🙏

पंचम श्री पुत्र पुत्री वात्सल्य🌷

षष्ठ श्री गृह भूमि प्रणाम🙏

सप्तम श्री सूर्य नमस्कार🙏

अष्टम श्री जगत वंदन🙏

यही से हमारा सवेरा

यही ही हमारा बसेरा

यही से हमारा सीतारा

यही ही हमारा सहारा

यही से हमारा जीवन

यही ही हमारा तर्पण

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्यार में खो जाना

प्यार में डूब जाना

प्यार में गुल जाना

प्यार में एक होना

प्यार में समा जाना

सच! प्यार में ऐसा हो जाना

जैसे नीर

जैसे फूल

जैसे रंग

जैसे ज्योत

जैसे महक

जैसे सांस

जैसे दिल

जैसे आत्मा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक पराकाष्ठा

एक अक्षर

एक नज़र

एक ख्याल

एक स्पर्श

एक याद

एक महक

एक सांस

हम

हम समर्पित

हम कुर्बान

हम उनके

बस हम नहीं

हम वो

हम कान्हा के

कान्हा कान्हा कान्हा

केवल कान्हा

" राधा " 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चरित्र "

सच हम सांस लेते है - चरित्र के साथ

सच हम जीते है - चरित्र के हाथ

सच हम धर्म अपनाते है - चरित्र के पाथ

सच हम सत्य स्वीकारते है - स्व समझ के जात

सच हम प्रेम करते है - स्व उर्मि के जाग

सोचना - हम जीवन जीते है? या टटोलते टटोलते कहीं खोते रहते है?

🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

माधव माधव माधव माधव
माधव माधव माधव माधव
माधव माधव माधव माधव
ओहहह! माधव माधव रटते रटते
माधव आंगन पधारा 🙏

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
ओहहह! कृष्ण कृष्ण रटते रटते
कृष्ण आंगन पधारा 🙏

यह कैसा संजोग
यह कैसा संयोग

हे माता! तुझे बार बार प्रणाम 🙏
तुने क्या छोटा सा नन्हा सा
नाम दिया है
कृष्ण कृष्ण कृष्ण
और हमने अपनी अंदर उतार दिया
कृष्ण कृष्ण कृष्ण
हमारे आंगन पधारे तीन माधव 🙏
आओ माधव हमारे ही नैनवा 🙏
आओ माधव हमारे ही मनवा 🙏
आओ माधव हमारे ही तनवा 🙏

नैनों से सदा दर्शन पायें
मन से सदा स्थिरता पायें
तन से सदा पवित्रता पायें

हे आओ माधव! हमारे आंगन
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे तपस्वी आत्मा! जीवन साथी स्वरूप 🙏

यह मनुष्य जीव जगत में हम पधारे और हमें जो अपना हाथ दिया, साथ दिया, पुरुषार्थ दिया, प्रेम दिया, अपने आपको समर्पण किया - तन, मन, धन और जीवन से आपको शत् शत् नमन 🙏

विचार, अक्षर, धर्म और कर्म की हर उपासना में हम साथ साथ जुड़े, अनेकों धागों से हम बंधे, बंधते बंधते एक हुए और जीवन सागर पार करने लगें। अनेकों सुख की घड़ी, मुसीबतों की क्षणे, तकलीफों की बौछारों, सामाजिक आंधियों और कौटुंबिक तूफानों में एक अडग योद्धा और आत्म ज्योत प्रज्वलित रख कर जो परमानंद जीवन महकाया 🌷

तुम्हें सलाम सलाम और सलाम

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर सांस उच्छवास में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर बूंद बूंद में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर लहर लहर में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर रज रज में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर अवकाश में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर ज्योत में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर विचार विमर्श में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर ख़्याल सवाल में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर रंग बिरंग में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर वन उपवन में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर पत्ते पत्ते में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर सूर राग में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर गीत संगीत में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर महक सुंगध में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर नज़र नज़र में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर कदम कदम में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर संग अंग में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर प्रीत प्रेम में

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितना अदभुत यह जगत है 👍
जन्म धरते ही माता पिता के साथ
भाई बहन के साथ
दादा दादी के साथ
कहीं कुटुंबी के साथ

बड़े हुए तो मित्रों के साथ
संबंधी के साथ
पड़ोसी के साथ
नजदीकिओं के साथ

युवा हुए तो प्रकृति के साथ
सृष्टि के साथ
पशुओं के साथ
पंखीओं के साथ

स्नातक हुए तो शिक्षा के साथ
विज्ञान के साथ
व्यवहार के साथ
समाज के साथ

वैष्वीक हुए तो संस्था के साथ
अनुशासन के साथ
अनेकों विषयों के साथ
अनेकों निष्णातो के साथ

विवाहित हुए तो पत्नी के साथ
अनेकों व्यक्तिगतो के साथ
पुत्र के साथ
पुत्री के साथ

वयस्क हुए तो जगत के साथ
धर्म के साथ
आध्यात्म के साथ
सेवा के साथ

बुजुर्ग हुए तो पोते पोति के साथ
पुस्तक के साथ
धर्म स्थानों के साथ
यात्रा के साथ

आखरी पड़ाव पर पहुंचे तो एकांत के साथ
तपस्या के साथ
अनुभव के साथ

अंतिम सांस तो आत्मा के साथ
ब्रह्मांड के साथ
ब्रह्म के साथ
परमात्मा के साथ
🌷🙏🌷
साथ साथ साथ साथ साथ साथ
" गजब " अजब " सहज "
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" पाटोत्सव "
नैनों में श्री नाथ बैठे है
नैनोंत्सव
कर्णो में श्री नाथ बैठे है
कर्णोत्सव
अधरो पर श्री नाथजी बैठे है
अधरोत्सव
सांसों से श्री नाथजी बैठे है
अग्नित्सव
भक्ति से श्री नाथजी बैठे है
मनोरथ
सेवा से श्री नाथजी बैठे है
दासोत्सव
पुरुषार्थ से श्री नाथजी बैठे है
फलोत्सव
समर्पण से श्री नाथजी बैठे है
सर्वोत्सव
कीर्तन से श्री नाथजी बैठे है
लीलात्सव
रंग से श्री नाथजी बैठे है
रंगोत्सव
मन से श्री नाथजी बैठे है
मनोत्सव
तन से श्री नाथजी बैठे है
देहोत्सव
धन से श्री नाथजी बैठे है
शास्त्रोत्सव
जीवन से श्री नाथजी बैठे है
जीवोत्सव
पुष्टि मार्ग सिद्धांत से श्री नाथजी बैठे है
पुष्टोत्सव
आनंद से श्री नाथजी बैठे है
आनंदोत्सव
आत्मा से श्री नाथजी बैठे है
परमोत्सव
वैष्णव से श्री नाथजी बैठे है
निरपेक्षोत्सव
रास से श्री नाथजी बैठे है
रासोत्सव
ह्रदय से श्री नाथजी बैठे है
प्रेमोत्सव
हे परब्रह्म श्री नाथजी 🙏
आपसे ही आपका हमारे जीवन काल का पुष्टोत्सव
जिससे आप सदा हमारे साथ हो 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न कुछ कहे तो प्यार है

न कुछ समझे तो एकरार है

न कुछ देखे तो इजहार है

न कुछ लिखे तो इंतजार है

न निकट आये तो प्रेम है

कभी याद आए तो तड़प है

कभी कोई असर पाये तो पुकार है

कभी नैनों में विरह बिंदु भर आए तो मिलने का संकेत है

कभी सामने पाये तो परम मिलन है

हे राधा! 🌷

हे श्यामा! 🌷

हे कान्हा! 🌷

हे श्याम! 🌷

नमन 🙏 नमन 🙏 नमन 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह देह
यह मानव जन्म
यह मनुष्य जीवन
अति गहराई से अध्ययन करे
" मैं " मानव देहधारी
" मैं " आत्मीय मनुष्य
" मैं " अनोखा जीवन आचारी
बचपन - जो भी पाया
युवावस्था - तो इतना समझ और निर्णय कारी
यह सत्य यह असत्य इतना न्याय कारी
चाहे कुटुंब आदेशानुसारी
आचरण सत्य समझ आज्ञाकारी
नैनों सही द्रष्टि चारी
वचन सही आदर चारी
क्रिया सही सिद्धांत धारी
कर्म सही धर्म आधारी
तो मेरा जीवन सदा माधुरी
साथ साथ सदा हितकारी
जो निहारे बार बार स्वीकारी
हर कोई अपनाये आनंद विहारी
सुख सुख बांटें एक एक सहकारी
अदभुत अनोखा मनुष्य विद्या धरी
सत्य संस्कार सत्य संस्कृति
अभय निडर जीये नर नारी
यही हमारी सही पहचान
यही है सत्य मनुष्य दान
हमसे है जगत असंगत से हम नहीं
हमारी यह नीति नहीं हमें कोई भीति
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
अवश्य जागे स्वीकारे अपनाये यह पल से
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनी गहरी निकटता है

हे कान्हा! मेरा चाहना न चाहना तो भी तु मुझे भाये
यह कैसी प्रेम लक्षणा है!

हे कान्हा! मेरा पास रहना न पास आना
तो भी तु मेरे पास है
यह कैसी नजदीकी है!

हे कान्हा! मेरा तुझे अपना मानना न मानना
तो भी तु मुझे मानता है
यह कैसी पहचानता है!

हे कान्हा! मेरा तुझे स्वीकारना न स्वीकार करना
तो भी तु मुझे स्वीकारता है
यह कैसा पकडना है!

हे कान्हा! मेरा तुझे अपनाना न अपनाना
तो भी तु मुझे अपनाता है
यह कैसा अपनाना है!

हे कान्हा! मेरा तुझे देखना न देखना
तो भी तु मुझे देखता है
यह कैसा निहालना है!

हे कान्हा! मेरा तुझसे डरना न डराना
तो भी तु मुझे न डराता है
यह कैसा निडरना है!

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वृंदावन "

किसे कहते है?

वृंदावन स्थल है?

वृंदावन नगर है?

वृंदावन धाम है?

वृंदावन तीर्थ है?

वृंदावन यात्रा है!

वृंदावन प्रदेश है?

वृंदावन श्री प्रभु का लोक है?

वृंदावन श्री प्रभु की लीला स्थली है?

सोचे! वृंदावन किसने दर्शन किया है?

सोचे! वृंदावन कौन पहुंचा है?

गहराई से सोचे - वृंदावन क्या है?

हम इतने भाग्यशाली है - वृंदावन के लिए हम समझ सकते है - पा सकते है - लुटा सकते है - समर्पित हो सकते है।

हम इतने भाग्यशाली है - वृंदावन हमारे धर्म में है - हमारे जीवन में है - हमारी संस्कृति में है - हमारे लक्षण में है।

हम क्या है? निकट निकट से भी निकट तो भी हम दूर

दूर दूर से भी हम एक

हे वृंदावन तु क्या है और कौन है?

प्रेम की सर्वोच्च पराकाष्ठा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अकेला नही

हां! कभी भी नहीं

चाहे तु कहीं हो

मेरे नैनों में तु दिखें

मेरे मन में तु मचले

मेरे विचार में तु झांकें

मेरे संग संग संग

संग संग संग

है तु सदा

इसलिए तो तु राधा है 🌷

इसलिए तो मैं कान्हा हूं 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" शिवरात्रि "

" महा शिवरात्रि "

जीवन की यह रात

अदभुत होती है यात्र

जीव से शिव भये

आत्म से परमात्मा होये

ऐसा अनोखा शास्त्र

ऐसा असाधारण संस्कृत

भाग्यशाली हम यह भूमि के

जन्म जीवन यह संस्कृति के

स्व पाया आकार से निराकार

जीव जीव जीव शिव शिव शिव

एक हो जाएं साक्षात्कार

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

शिवरात्रि की शुभकामनाएं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

મિત્રો! નમસ્કાર 🙏

આપણે ચોક્કસ ભારત દેશનાં સપૂત છીએ એટલે આ ભૂમિ આપણી જન્મભૂમિ છે અને કર્મભૂમિ છે. આપણાં દરેક શ્વાસ આ ભૂમિ પર થી ઉઠે છે અને ઉચ્છવાસ આ ભૂમિ પર ઠાલવીએ છે.

આ શ્વાસ ઉચ્છવાસ માં આપણે કેટલું બધું સિંચિએ છે અને અનેક ઘણું પામીએ છીએ 🙏

આ પામવામાં થતો પુરુષાર્થ આપણે આપણાં માતાપિતા, કુટુંબ અને સમાજ પાસેથી મેળવી સંસ્કાર અને સંસ્કૃતિનું શિક્ષણ ધારણ કરીએ છીએ.

ચોક્કસ!

હાં! ચોક્કસ

અતિ ઊંડાણ થી વિચારીએ કે

આપણે જે ઉંમર પર પહોંચ્યાં છે તે ઉંમરનાં અનુભવથી ચોક્કસ કહીં શકીએ છીએ કે આ કક્ષાનાં જીવન સુધી પહોંચવા મેં કેટલાં ખૂન કર્યાં છે?

એકાંતમાં બેસીને વિચારો સંસ્કાર - સંસ્કૃતિ - ધર્મ - શાસ્ત્ર પ્રમાણિત મેં કેટલાં ખૂન કર્યાં છે?

ખૂન!

હાં! ખૂન

શું કહો છો?

ચોક્કસ કહું છું 🙏

પ્રથમ ખૂન આપણે આપણું જ કર્યું છે.

વિચારો - વિચારો

જન્મનો અર્થ સમજી ને જે કંઈ સંસ્કાર અને સંસ્કૃતિ આધારિત, ધર્મ અને વિજ્ઞાન આધારિત, શાસ્ત્ર અને જ્ઞાન આધારિત મેં કેટલાં આચરણ કર્યા?

મેં કેટલો આડંબર કર્યો?

મેં કેટલી યોગ્યતા કેળવી?

ઓહહહ! અનેક અનેક અનેક

છે ને પોતાનું જ ખૂન 🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

हे वल्लभ! आप कहां हो?
पुष्टि मार्ग आपने संस्थापना
न आडंबर
न अहंकार
न अंधश्रद्धा
न अंधविश्वास
न अधूरपता
न अज्ञानता
न अस्पृश्यता
न अपेक्षा
न तितिक्षा
न विघ्नता
न विघटनकारी
न इच्छाधारी
न तृष्टिकरण
न धृष्टता
न विषयोचार
न भ्रष्टाचार
न दुराचार
न व्यभिचार
न विवशता
न धृर्तता
न असमानता
आदिसे संगठित - शिस्त - निरपेक्ष - निखालस - स्वलंबन - प्रेम - माधुर्य - पुष्टि संस्कार सभर 🙏
आपको निहारते हम आपको दंडवत प्रणाम करते हैं 🌷🙏🌷
आपका स्मरण करते हम आपमें एकात्म होते हैं 🌷🙏🌷
आज अचंभित! कैसे निहारु श्री वल्लभ 🙏
कैसे स्मरु श्री वल्लभ 🙏
न कहीं न कहीं न कहीं 🌷🙏🌷
कुछ जगाओ यह मन - तन - धन और जीवन में जो निडरता से अयोग्यता का सामना करके
श्री वल्लभ - पुष्टिमार्ग उज्जवले 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

रंग रंग रंग रंग रंग

प्रथम रंग श्री महाप्रभुजी रंगायो

पुष्टि ब्रह्मसंबंध से बंधायो

रंग रंग रंग रंग रंग

दूजो रंग श्री गोवर्धन रंगायो

व्रज रज से तन उजारयो

रंग रंग रंग रंग रंग

तृतीय रंग श्री यमुनाजी डार्यो

पुष्टि पान से अंतर विशुद्धायो

रंग रंग रंग रंग रंग

चतुर्थ रंग श्री श्रीनाथजी उडायो

परब्रह्म से आत्मा जुडायो

रंग रंग रंग रंग रंग

पंचम रंग श्री अष्टसखा रंगायो

दासानु दास से दास रचायो

रंग रंग रंग रंग रंग

षष्ठी रंग श्री पुष्टिमार्ग रंगायो

दुर्लभ मानुष देह साधन जीवायो

रंग रंग रंग रंग रंग

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कोई भी अक्षर - सत्य मंत्र है

कोई भी स्वर - सत्य रणकार है

कोई भी विचार - सत्य स्मरण है

कोई भी क्रिया - सत्य पुरुषार्थ है

आजमाना 🌷🙏🌷

कोई भी बूंद - तत्व है

कोई भी ज्योत - तत्व है

कोई भी आकाश - तत्व है

कोई भी रज - तत्व है

कोई भी वायु - तत्व है

कितने अनोखा है यह मनुष्य देह

कितना विभुत है यह मनुष्य देह

कितना अजोड़ है यह मनुष्य देह

कितना अनमोल है यह मनुष्य साधन

हम कैसे रोगी हो सकते है?

हम कैसे भोगी हो सकते है?

हम कैसे लोगी हो सकते है?

श्री वल्लभ का एक स्मरण - हम वियोगी हो सकते है 🙏

श्री यमुनाजी का एक नमन - हम विशुद्ध हो सकते है 🙏

श्री अष्टसखा का एक कीर्तन - हम दास हो सकते है 🙏

श्री वैष्णवजन की एक सेवा - हम भक्त हो सकते है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ओहहह! तु न चलेगा तो कौन चलेगा

ओहहह! तु रुकेगा तो हर कोई रुकेगा

तुझे चलना ही है

तुझे चलना ही होगा

तुझे चलना ही पड़ेगा

तुझे चलना ही रहेगा

श्री वल्लभ चले

श्री अष्टसखा चले

श्री वैष्णव चले

श्री गोवर्धन चले

तुझे भी चलना ही है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अपने आपसे
अपने आपमें
आनंद लुटाओ ऐसा
दुनिया आनंदमय हो जाय

जो कोई करे संशय
जो कोई करे विषय
अपने मन स्थिर ऐसा
संशय विषय बिखर जाय

अपने आपसे
अपने आपमें
आनंद लुटाओ ऐसा
दुनिया आनंदमय हो जाय

जो कोई करे विश्वासघाती
जो कोई करे दुष्प्रचार
अपना जीवन मधुर ऐसा
विश्वास प्रचार सन्मान हो जाय

अपने आपसे
अपने आपमें
आनंद लुटाओ ऐसा
दुनिया आनंदमय हो जाय

जो कोई करे अपेक्षा
जो कोई करे विपक्षता
अपना नमन निरपेक्ष ऐसा
दुनिया हमारी मित्र हो जाय

अपने आपसे
अपने आपमें
आनंद लुटाओ ऐसा
दुनिया आनंदमय हो जाय
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

राधा स्मरण मुझे प्रेम उर्मि जगाये

राधा गूंजन मुझे अंतर स्पंदन जगाये

राधा स्वर मुझे प्रीत पुकार जगाये

राधा रंग मुझे श्याम रंग रंगाये

राधा आनंद मुझे माधवानंद लुटाये

राधा राधा राधा राधा

राधा राधा राधा राधा

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

गोविंद! हे गोविंद!

गोविंद!

कितनी मधुर यह गूंज है

जो अपने मन से निकली

जो अपने नैन से निकली

जो अपने अंतरंग से निकली

जो अपने अधर से निकली

हां!

क्यूं और कैसे निकली?

क्यूंकि - हमने अपने आपको समर्पित किया है - गोविंद को

हमारे मन में बसा गोविंद

हमारे नैनों में बसा गोविंद

हमारे अंतरंग में बसा गोविंद

हमारे अधर पर खड़ा गोविंद

गोविंद! हे गोविंद!

हमारे संसार का तारणहार गोविंद

हमारे प्रकृति का सिंचनहार गोविंद

हमारी सृष्टि का कारणकार गोविंद

हमारे मनविजयी उद्धार गोविंद

गोविंद! हे गोविंद!

🌷🙏🌷🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझे नहीं पता है कि मैं कौनसी जाती का हूं?

क्या आपको पता है आप कौनसी जाती के हो?

मुझे नहीं पता है कि मैं कौनसा धर्म से जुड़ा हूं?

क्या आपको पता है आप कौनसे धर्म से जुड़े हों?

मुझे नहीं पता है कि मैं कौनसी आत्मीयता पाऊं?

क्या आपको पता है कि आपको कौनसी आत्मीयता पानी है?

मुझे नहीं पता है कि मैं कौनसे जन्म में हूं?

क्या आपको पता है कि आप कौनसे जन्म में हो?

युगों युगों से बस यूं ही सुनता हूं, पढ़ता हूं, जीता रहता हूं कि मुझे कोई आख़री पड़ाव पर पहुंचना है, पर आज भी नहीं पता मैं कौनसे पड़ाव पर हूं?

क्या आपको पता है कि आप कौनसे पड़ाव पर पहुंचे हो?

अनेकों संस्कृति, तत्वज्ञानी, परम भगवदीय चरित्रों समझें पर तय नहीं हो रहा है

मैं कौनसी पात्रता में हूं?

क्या आपको पता है कि आप कौनसी पात्रता पर हो?

🌷🙏🌷🌷🙏🌷

अपना स्व चिंतन और मनन और अध्ययन से समझना 🌷🙏🌷

आनंद लुटे और लुटाएं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" साथी "
साथ साथ से साथी
डग डग से साथी
संग संग से साथी
रंग रंग से साथी
अंग अंग से साथी
सत्संग सत्संग से साथी
मन मन से साथी
विचार विचार से साथी
आचार आचार से साथी
व्यवहार व्यवहार से साथी
कर्म कर्म से साथी
धर्म धर्म से साथी
जन्म जन्म से साथी
जीवन जीवन से साथी
आत्मा आत्मा से साथी
साथी जो न कभी बिछड़ता
साथी जो न कभी छूटता
साथी जो न कभी तूटता
साथी जो न कभी डरता
साथी जो न कभी दुष्टता
साथी जो न कभी धूर्तता
साथी जो न कभी लुटता
साथी जो न कभी मारता
साथी जो न कभी पीटता
साथी जो न कभी पीडाता
साथी जो कृष्ण सखा जैसा
साथी जो राधा सखी जैसी
साथी जो हनुमान भक्त जैसा
साथी जो कर्ण मित्र जैसा
साथी जो ....
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा!

तेरे नैनन का रंग

तेरे मन का उमंग

से ऐसा रंग दे

सारी सांसें भिगोकर

मेरी नैनन निजारु

मेरा मनडा मिलाऊं

जित जित देखुं श्याम निहारु

जित जित सोचूं श्याम सुहारु

हे प्रितम पिया! मोहे रंग दे

हे कान्हा!

तेरे प्रेम का रंग

तेरे आत्म सुरंग

से ऐसा रंग दे

सारी ज़र्रा रंग कर

मेरे कण कण उजालुं

मेरे अंत रंग जगाऊं

जित जित जाऊं श्याम ही पाऊं

जित जित ठहरु श्याम ही बसाऊं

हे प्रितम पिया! ऐसी रंग दे

ऐसी रंग दे! ऐसी रंग दे!

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

मेरे तो प्रेम प्रियतम तुम
मेरी तो चांद चांदनी तुम

मेरे तो फूल भंवर तुम
मेरी तो सूरज उर्जा तुम

मेरे तो ख्वाब स्वप्न तुम
मेरी तो धड़कन दिल तुम

मेरे तो ख्याल यादें तुम
मेरी तो रुह रंग तुम

मेरे तो पायल की झंकार तुम
मेरी तो चुड़ियों की खनखन तुम

तुम ही तुम हो
तुम ही राधा
तुम ही मोहन
तुम ही सीता
तुम ही राम
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझे अवश्य पता है और इतनी गहराई से अध्ययन करता हूं

कोई ने भी " श्री कृष्ण: शरणं मम " के लिए सत्संग और चिंतन नहीं किया और न किसीने जिज्ञासा प्रश्न अपने ब्रह्मसंबंध स्वरुप आचार्य और अपने आत्मीय पुष्टि भगवदीय को पूछा 🙏

वैष्णव को अवश्य जानना, समझना, पहचानना और अपनाना होता है " श्री कृष्ण: शरणं मम "

यह तो मूल मंत्र है 🙏

जैसे श्री वल्लभाचार्य जी ने पुष्टिमार्ग की स्थापना करी उसके पहले उन्हें जो जो लीलानुभूति हूई उसी के आधार और प्रमाण से ही यह मंत्र या सिद्धांत का प्रार्दुभाव हुआ था। जब भी वह प्रथम यात्रा में व्रज मंडल में प्रवेश पाया वह अपने आप में एकात्म होने लगे, उन्हें श्री कृष्ण की अनेकों लीलाओं की अनुभूति होने लगी, उनका तन मन और जीवन श्री कृष्णमय हो रहा था - उनके श्री आचार्य जी ने जो जो लीलाएं सूचित की थी वह लीलाओं का उन्हें साक्षात्कार हो रहा था। 🌷 🙏 🌷

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

तुम्हें क्या बताऊं कि

तुम मेरी प्रेम पूजा हो 🙏

मेरे जीवन की आत्म ज्योत हो

तुमसे ही मेरी संसार नैया

तुम ही मेरी सागर खेवैया

तेरी मेरी मधुर निशानी

जहां तुम हो साथ साथ होगी

🌷❤️🌷❤️🌷❤️🌷

हे राधा! हे महारानी! हे व्रजकुंवारी

ज़माने से मैंने अपने पास खिंचा

यही मेरी आराधना यही मेरी साधना

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" श्री कृष्ण: शरणं मम "

अपने आपको तरासा 🙏

हे वल्लभ! आप हमारे आचार्य और हमारे लिए आपने इतना माधुर्य और इतना उत्तम मार्ग का प्रार्दुभाव थोड़े से अनुभूत अक्षर और शब्दों का समूह कर के अलौकिक मंत्र साक्षात्कार किया जो कोई भी समय - कोई भी व्यक्ति - कोई भी तत्व सुनकर, कहकर, गा कर, लिखकर, पुकार कर, सत्संग कर और मनन चिंतन कर स्व उद्धारक हो सकता है 🙏

आपकी कितनी अनोखी रचना के लिए आप स्व श्री कृष्णमय बने - श्री कृष्णमय हुएं। आप श्री कृष्ण लीलाओं में अपने आपको इतना डूबोया - आपने अपने आपको श्री कृष्ण चरित्रामृत में इतना निरुपण किया की आपकी स्व मति - गति और ज्योति श्री कृष्ण शरणागत होकर एकात्म हो गई 🙏

आप स्व पुष्टि पुरुषोत्तम हो गये 🙏

आपकी हर विचार धारा - कर्म पारायणता - धर्म यज्ञता और पुरुषार्थता श्री कृष्णमय हो कर श्री कृष्ण समर्पण हो गई 🙏

आप स्व श्री कृष्ण शरण हो गये🙏

आप श्री कृष्ण वरण हो गये 🙏

आप श्री कृष्ण पूरण हो गये 🙏

आपकी मानसी " श्री कृष्ण: शरणं मम " करने लगी

आपकी विद्यता " श्री कृष्ण: शरणं मम " स्वीकार ने लगी

आपकी यज्ञता " श्री कृष्ण: शरणं मम " अपनाने लगी

आपकी कृतज्ञता " श्री कृष्ण: शरणं मम " प्रज्ज्वलित हो उठी

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्यार करते हैं

हां! अवश्य प्यार करते हैं

पर

न मर्यादा है उम्र की

न मर्यादा है समय की

न मर्यादा है अमीरी की

न मर्यादा है ग़रीबी की

न मर्यादा है अनेकों की

न मर्यादा है कहींओ की

न मर्यादा है रिवाजों की

न मर्यादा है जाति की

मेरे मित्रों! हां पर यह मर्यादा उन्हें ही नहीं लगती जो केवल प्यार करते हैं

पर

जो प्यार का व्यवहार करें

वह प्यार करता है या व्यापार?

सोच लो 🙏

वह अवश्य मर्यादा और मान्यता भरे है

जैसे भक्त और भगवान

जैसे मीरा और गिरिधर

जैसे गोपियां और कान्हा

जैसे अष्टसखा और श्रीनाथ

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न गगन में चंद्र था

न आसमां में सूरज था

न जगत में पृथ्वी थी

न जगत में सृष्टि थी

तब से एक दिल है

जिसमें एक तेरा प्रेम है

जिसमें एक तेरा यार है

जो एक आत्मा से दो रुह बनी

एक मेरे प्रियतमा की रुह

दूजा मेरे प्रिये से रचाई यह रुह

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

एक वृंदावन में है

एक व्रज में है

एक नंदगांव में है

एक बरसाना में है

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कैसे बिछड़ी पी के मुख से बांसुरिया "
कैसी लीला है प्रेम की
नन्हा सा छोटा सा बालक ने अपने हाथ में थामा एक वांस का छोटा टुकड़ा और जैसे अधर पर सजाया - खुद हो गया दीवाना 🌷
सदा अपने हाथों में रखता
सदा अपने कमर से बांधता
सदा अपने अधर से बजाता
और
सदा अपने दिल से पुकारता
तो
किस किस को पुकारता
किस किस को बुलाता
किस किस को याद करता
किस किस को ख्यालों में बसाता
और
कहां कहां अपने आपको डूबोता
कहां कहां अपने आपको खोता
कहां कहां अपने आपको दौड़ाता
कहां कहां अपने आपको जगाता
कहां कहां अपने आपको बावरता
कहां कहां अपने आपको आहटता
और पाता
सामने पाये प्रियता
सामने पाये बावरिया
सामने पाये सांवरिया
सामने पाये गोपियां
सामने पाये नजरिया
सामने पाये विहरीया
सामने पाये तडपीया
सामने पाये तरसीया
सामने पाये आराध्या
सामने पाये सखियां
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक पुष्टि स्पंदन - श्री वल्लभ

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara

VIBRANT PUSHTI

५३ , सुभाष पार्क सोसायटी

संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006

गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 9327297507